भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नचिह्न

उनका खुश दिखना
जरूरी नहीं
कि सच ही हो,
कुछ लोग
ऐसे भी हैं
जो काट रहे हैं सज़ा
चुपचाप,
क़सूर नहीं जानते
और शायद
क़सूरवार भी नहीं...

~ ज्योतिकृष्ण वर्मा

वर्ष :02, अंक:13, अप्रैल 2025

9 789334 265828

आवरण- बंशीलाल परमार

संपादक : आलोक रंजन

भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नचिह्न

अप्रैल 2025 । तेरहवां अंक

प्रबंध सम्पादकः
प्रवीन कुमार 'प्रणय'

प्रबंध सहयोगः
पीयूष पुष्पम

सम्पादक
आलोक रंजन

आवरणः बंशीलाल परमार
रेखांकनः दीया शर्मा

अक्षर संयोजन
अदिति झा

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए प्रश्नचिह्न पत्रिका समूह का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही पत्रिका इसके लिए उत्तरदायी है।

वार्षिक मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	600.00 रुपये
संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए-	1500.00 रुपये
विदेशों में-	$25

एक प्रति का मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	50.00 रुपये
संस्थाओं के लिए-	100.00 रुपये
विदेशों में-	$10

विज्ञापन दरें :

बाहरी कवर-	20,000.00 रुपये
अन्दर कवर-	15,000.00 रुपये
अन्दर पूरा पृष्ठ-	10,000.00 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ-	7,000.00 रुपये

संपादकीय कार्यालयः

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,
विजय नगर, दिल्ली - 110009
मोबाइल : 9155113056

ई-मेलः prashanchinha.patrika@gmail.com
alokranjanoffice@gmail.com

वेबसाईटः https://prashanchinhapatrika.blogspot.com

फेसबुकः https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika

इंस्टाग्रामः https://www.instagram.com/prashanchinha.patrika

अनुक्रम

सम्पादकीय

कविताएँ

ज्योतिकृष्ण वर्मा, अनुराधा ओस, अनिल विभाकर

ज्योति रीता, शिवा शशांक ओझा

कहानियाँ

डॉ अमित रंजन

सावित्री शर्मा "सवि"

आलेख

डॉ. रेखा जैन

डॉ. मुकेश 'असीमित'

समीक्षा

सन्दीप तोमर

राजेश कुमार सिन्हा

विविध

सिमरन

सुनील चौधरी

प्रेम और युद्ध

मनुष्य के मस्तिष्क का यह स्वभाव होता ही है कि वह किसी चीज़, व्यक्ति या जगह के पूरे ज्ञान के बिना यदि उसे श्रेष्ठ समझता है तो उसके सीधा या उल्टा में अपनी बात बना लेता है और कभी-कभी वह बात बहुत ही अनावश्यक और बनी बनाई दिखाई देता है। कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि प्रेम और युद्ध के विषय में 'प्रेम और युद्ध में सब कुछ जायज है' कहावत निश्चित ही अनावश्यक और बनी बनाई बात लगती है। अनावश्यक और बनी बनाई इस वज़ह से है कि यदि प्रेम और युद्ध में सब कुछ जायज मान लिया जाय तो यह भी मानना पड़ेगा कि अब तक जितने भी जीव विनाशक युद्ध हुए या छल-कपट, प्रपंच युक्त लड़ाईयाँ लड़ी गई, मानवता को मारा गया, प्रेम के नाम पर जिस तरह से अमानवीय कृत्य हो रहे हैं, ये सब सही है। जिस प्रकार रिश्तों की अहमियत खत्म हो रही है, संबंधों की सीमा तोड़ी मरोड़ी जा रही है, प्रेम एकतरफा होकर जिस तरह खतरनाक रूप ले रहा है, आये दिन प्रेम के नाम पर युवक युवतियों में जिस तरह आत्महत्या की घटना बढ़ रही है, स्त्रियों के साथ प्रेम के नाम पर छल किया जा रहा है, आत्मिक स्नेह शारीरिक शोषण में बदल रहा है, चाहत की भावना विलुप्त हो रही है, स्त्री प्यार मोहब्बत के नाम पर उपभोग की चीज़ बनकर रह गई है।

हमारे यही विचार किसी व्यक्ति और संस्था के भी हो सकते हैं। जब प्रत्येक व्यक्ति के विचार एक ही विषय को लेकर भिन्न-भिन्न हो सकते हैं तो उस विषय को पूर्णतः जायज या पूर्णतः नाजायज कैसे ठहराया जा सकता है? इतना ही नहीं सच तो यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने आप में पूर्ण नहीं होता। यदि उसके अंदर गुण है तो कोई न कोई अवगुण भी जरूर होता है और यदि अवगुण है तो उसके द्वारा किये हुए किसी भी कार्य को हम पूर्णतः जायज कैसे ठहरा सकते हैं? हो सकता है कि किसी व्यक्ति विशेष द्वारा किसी कार्य को सही करने का प्रयास किया गया हो, वह किसी कार्य को जायज या नैतिक रूप से सही करने हेतु बचनबद्ध भी हो और कर भी रहा हो, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति से ऐसी अपेक्षा करना खासकर प्रेम या युद्ध के विषय में तो न्यायसंगत नहीं लगती।

वास्तव देखा जाए तो 'प्रेम और युद्ध' दोनों ही शब्द एक ही सिक्के के दो पहलू लगते हैं, क्योंकि प्रेम और युद्ध दोनों की पृष्ठभूमि क्रमशः भावनाओं के परस्पर मेल या भावनाओं को लगी चोट के कारण ही तैयार होती है। चूँकि भावनाऐं समुद्र के जल के समान होती है, कभी अपने लहरों से पूरे उफान पर होती है तो कभी बड़ी ही धीर, गंभीर और शांत। प्रेम अंतकरण से उपजी भावनाओं का समुच्च है जो मनुष्य को मनुष्य होने का एहसास कराती है। प्रेम के अपने कुछ मूल्य और निहितार्थ होते हैं, प्रेम की एक कसौटी होती है और इन्हीं प्रेमपरक मूल्यों, निहितार्थों एवं कसौटीयों को जो भी प्रेमी अपने मस्तिष्क एवं ह्रदय में धारण करता है, वहीं प्रेम इतिहास के पन्नों में दर्ज होता है।

प्रेम समर्पण की पूर्ण चाह रखता है और बिना पूर्ण समर्पण और निष्ठा के प्रेम की सफलता संदेहास्पद होती है। इतना ही नहीं मर्यादा, त्याग और संबंधों की सीमा को नजरंदाज करना किसी भी चीज को अस्वीकृत और अल्पकालीन बना देती है और ठीक यही बात प्रेम और युद्ध के संदर्भ में भी समझी जा सकती है।

इसी दौर में भारत सहित दुनिया के अनके देशों में आर्थिक असमानता बढ़ी। भारत में अरबपति बढ़ते गए। जनता गरीबी में और अधिक फंसती गई। किसानों ने आत्महत्या की, बेरोजगारों की संख्या बढ़ी और लाखों की संख्या में नौकरियां खत्म हुईं। भूमंडलीकरण या भूमंडीकरण अमेरिकीकरण के अलावा और कुछ नहीं है, जबकि अमेरिकी हित और विश्वहित या जनहित में अंतर है। निश्चय ही उदारीकृत अर्थव्यवस्था से दुनिया के लगभग सभी देश कमोबेश प्रभावित हैं। प्रत्येक देश में दूसरे देशों के व्यापारिक संस्थान होने से युद्ध की संभावना समाप्त हो जाएगी, यह मात्र एक आशावाद था।

आपका-

आलोक रंजन
alokranjanoffice@gmail.com

विडंबना

उनका खुश दिखना
जरूरी नहीं
कि सच ही हो,

कुछ लोग
ऐसे भी हैं
जो काट रहे हैं सज़ा
चुपचाप,

क़सूर नहीं जानते
और शायद
क़सूरवार भी नहीं!

ज्योतिकृष्ण वर्मा
सम्पर्क : RZ-106-बी, इंद्रा पार्क उत्तम नगर
नई दिल्ली 110059
ईमेल : jkverma333@gmail.com